

23-24 Oct 2021

## कुबेर नाथ राय के साहित्यिक निबंधों में सांस्कृतिक जागरूकता पर नया विचार

सुषमा, शोधार्थी (हिंदी विभाग), सनराइज विश्विधालय, अलवर (राजस्थान)

### सारांश

कुबेरनाथ राय हिंदी के प्रमुख ललित निबंधकारों में प्रतिष्ठित हैं, जिनके साहित्य में भारतीय संस्कृति, परंपरा, लोकजीवन, प्रकृति, इतिहास और मानवीय मूल्यों का व्यापक एवं संवेदनशील चित्रण दिखाई देता है। उनके साहित्यिक निबंध केवल व्यक्तिगत अनुभूतियों और सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना को समझने और उसके विभिन्न आयामों पर विचार करने का महत्वपूर्ण माध्यम भी हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में कुबेरनाथ राय के साहित्यिक निबंधों में निहित सांस्कृतिक जागरूकता का अध्ययन एक नवीन दृष्टिकोण से किया गया है। उनके निबंधों में भारतीय परंपरा और आधुनिक जीवन के बीच दिखाई देने वाले संवाद, सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण तथा बदलते सामाजिक परिवेश के प्रति सजग दृष्टि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राय भारतीय संस्कृति को केवल अतीत की विरासत के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे निरंतर विकसित होने वाली जीवन-दृष्टि के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके लेखन में लोकसंस्कृति, मिथक, पुराण, भारतीय दर्शन, प्रकृति और ग्रामीण जीवन के विविध संदर्भ आधुनिक चिंतन से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। साथ ही, पाश्चात्य प्रभाव और आधुनिकता के संदर्भ में उनकी दृष्टि सांस्कृतिक आत्मबोध तथा अपनी जड़ों से जुड़ाव की आवश्यकता को रेखांकित करती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कुबेरनाथ राय का निबंध साहित्य वर्तमान समय में सांस्कृतिक पहचान, परंपरा और आधुनिकता के प्रश्नों को समझने के लिए किस प्रकार प्रासंगिक है। इस दृष्टि से उनका साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध करने वाला महत्वपूर्ण रचनात्मक दस्तावेज माना जा सकता है।

**मुख्य शब्द:** कुबेरनाथ राय, ललित निबंध, सांस्कृतिक जागरूकता, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक चेतना, परंपरा, आधुनिकता, लोकसंस्कृति, भारतीय दर्शन, साहित्य